संपादक का नोट

मसीह यीशु में प्यारे भाइयों और बहनों, हमारे जी उठे हुए प्रभु का आशीर्वाद आपके साथ आज और हमेशा बना रहे।

प्रेरितों के काम 2:37 ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें?''

जब पतरस ने यीशु के बारे में लोगों को उपदेश दिया और जब उन्होंने वचन सुना, तो उन्होंने इस बात का प्रचार किया कि कैसे उन्होंने यीशु का इंकार किया था और उन्हें क्रूस पर चढ़ाया था, उनकी अंतरात्मा ने तुरंत उन लोगों को दोषी ठहराया, और उन्होंने पतरस से पूछा ''हमें क्या करना चाहिए?'' इन लोगों की तरह, हमारी अंतरात्मा को भी आज हमसे बात करनी चाहिए; हमें खुद से भी यही सवाल पूछना चाहिए, ''हमें क्या करना चाहिए? आज हम अपने पापों से कैसे छुटकारा पा सकते हैं?'' जब हम वास्तव में अपने दिलों की गहराई से प्रार्थना करते हैं, तो यीशु हमारी प्रार्थनाओं को सुनेंगे और तुरंत हमें अपने लहू से धोएंगे और हम अपने जीवन में हर पाप से बाहर आने का अनुग्रह प्राप्त करेंगे, क्योंकि यीशु के लहू में शक्ति है। लेकिन, यह महत्वपूर्ण है कि हम पहला कदम उठाएं और उपरोक्त प्रशनों का उत्तर प्राप्त करने के लिए अपने आप से सवाल करें! हम जानते हैं कि पाप की मजदूरी मृत्यु है, फिर भी यहूदा ने यह सवाल नहीं पूछा कि ''मुझे अब क्या करना चाहिए कि मैंने यीशु को धोखा दिया है?'' इसके बजाय, उसने जाकर उन लोगों के सामने चाँदी के सिक्के फेंके, जिन्होंने उसे दिया और आत्महत्या कर ली। यीशु मसीह के सामने यहूदा ने पश्चाताप नहीं किया।

यद्यपि यह वचन कहता है कि जब हम पाप करते हैं, तो पाप की मजदूरी मृत्यु है; फिर भी, जब हम पश्चाताप के साथ यीशु के पास जाते हैं और इस प्रश्न के साथ कि ''मुझे क्या करना चाहिए? मैं इस पाप से कैसे बाहर आ सकता हूं?'' – यीशु हमें हमारे हर पाप से बाहर निकालने के लिए तैयार है, हालाँकि आज भी वह पाप बड़ा हो या छोटा हो हमें छुटकारा देने के लिए यीशु तैयार है।

यूहन्ना 19: 28–29 ''28 इस के बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं प्यासा हूं। 29 वहां एक सिरके से भरा हुआ बर्तन धरा था, सो उन्होंने सिरके में भिगोए हुए इस्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया।'' यीशु ने क्रूस पर अपने शारीरिक रूप में एक इंसान की तरह बड़ी तकलीफ का सामना किया।

यीशु ने अपनी आग को पृथ्वी पर भेजने की इच्छा की, लेकिन प्रभु को अपने जीवन का बलिदान देना पड़ा और गतसमनी के बगीचे में पीड़ित होना पड़ा। लूका 12: 49–50 ''49 मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूं; और क्या चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती ! 50 मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है; और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में रहूंगा?''

यीशु ने गतसमनी के बगीचे में अपने शरीर को क्यों तोड़ा? यह हमारी खातिर था, ताकि वह इस धरती पर आग भेज सके। यीशु को पता था कि इस आग को 'भांपने' का समय और स्थान था। जैसे की गतसमनी के बगीचे में। मत्ती 26:36 ''तब यीशु ने अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं।''

गतसमनी के बगीचे में, यीशु का पसीना लहू की बूंदों में बदल गया। उस समय, उस बहुत ही दर्दनाक और दुखद स्थिति में, यीशु को गिरफ्तार किया गया था और अलग–अलग जगहों पर घसीटा गया था जैसा कि हम यूहन्ना 18:13, 24 और 28 में देखते हैं। यीशु को जगह–जगह से घसीटा गया था, जैसे कोई चोर के हाथों को बांधकर ले जाया जाता है; उन्हें एक क्षेत्र से दूसरे इलाके में फेंक दिया जाता था। वह पूरी तरह से अपमानित था और पूरी तरह से कमजोर और दुर्बल हुआ था। यीशु ने यह सब अपमान, दुःख और दर्द किसके लिए सहन किया? आपके और मेरे लिए! इसलिए, हमें अपने पापों को जारी नहीं रखना चाहिए और उस लहू को ग्रहण करना चाहिए जो कलवारी के क्रूस पर बहाया गया था, बल्कि हमारे पापों को स्वीकार करके और उनसे छुटकारा प्राप्त करना चाहिए।

आज, हमारे पास अपने पापों को यीशु के हाथों में देने और उन्हें स्वीकार करने का एक और अवसर है। जी हाँ, आज यीशु हमारे लिए हमारे पिता परमेश्वर से प्रार्थना और विनती कर रहे है। लूका 23: 34 कहता है, ''तब यीशु ने कहा; हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहें हैं और उन्होंने चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए।''

यीशु छह घंटे तक क्रूस पर रहे और पुरे छह घंटों तक उन्होंने आपके और मेरे लिए एक ही प्रार्थना की। क्या हमारे जीवन में इससे बड़ा प्रेम हो सकता है? यीशु मसीह हमारे लिए जिस बलिदान और अपमान से गुजरे, उसकी तुलना इस दुनिया में किसी और चीज से नहीं की जा सकती है। यीशु ने सभी दुखों का सामना किया ताकि हम इस धरती पर एक सम्मानित जीवन जी सकें।

इसलिए, प्रभु को बुलाओ, वह हमेशा आपके पास सुनने, उद्धार करने और आशीर्वाद देने के लिए आपके पास है। हमेशा याद रखें कि प्रभु ने कलवारी के क्रूस पर अपना जीवन दिया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठे, केवल आपके लिए!

इस ईस्टर आपके और आपके सभी निकट और प्रिय लोगों को प्यार, शांति और आनंद मिले।

पास्टर सरोजा म।

कबूतर पवित्र आत्मा का प्रतीक है।

मत्ती 3: 16 ''और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।'' हमने वचन में पढ़ा है कि प्रभु की आत्मा यीशु मसीह पर एक 'कबूतर' के रूप में उतरी। पक्षी कई प्रकार के होते हैं..मैना, कौआ, मोर, तोता, आदि, लेकिन प्रभु की आत्मा केवल कबूतर के रूप में नीचे आती है। हम नए नियम की अन्य तीन पुस्तकों में भी यही संदर्भ देखते हैं। आइए पढ़ते है मरकुस 1: 10 ''और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उस ने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर की नाई अपने ऊपर उतरते देखा।'' लूका 3: 22 ''और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर की नाईं उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं।'' यूहन्ना 1: 32 ''और यूहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया।'' परमेश्वर का प्रेम भी एक उक़ाब की तरह है जो अपने पंखों को हमारे ऊपर फैलाते है और हमेशा हमारी रक्षा करते है, आइए पढ़ते हैं व्यवस्थाविवरण 32: 11 ''जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर ऊपर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने पंख फैलाकर उसको अपने परों पर उठा लिया।'' जब हम यीशु के प्रेम को याद करते हैं, तो हम उसे एक चरवाहे के रूप में देखते हैं। लगभग सभी कलाकारों के मन में यह सोच का निर्माण होता है जब वे यीशु का चित्र बनाते हैं, हमारे चरवाह के पास हमेशा एक भेड़ रहती है। इसलिए जब हम यीशु के प्रेम को याद करते हैं, तो वह हमारे लिए एक बलि के रूप में मेमने की तरह याद किया जाता है। आइए हम पढ़ें यूहन्ना 1: 35–36 ''35 दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे। 36 और उस ने यीशु पर जो जा रहा था दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।'' यीशु मसीह हमारे बलिदान का मेमना है। जैसा कि हमने पहले मत्ती के वचन में पढ़ा है, हमने पिता परमेश्वर के प्रेम को देखा है, जो यीशु मसीह पर एक कबूतर के रूप में उतरा है। बहुत से लोग बपतिस्मा ले चुके हैं और जब उनसे पूछा जाता है कि वे कैसा महसूस करते हैं, तो निश्चित रूप से वे जवाब देते हैं ''हमें लगा कि हमारे ऊपर एक कबूतर आया है, जबकि उनमें से कुछ का कहना है कि हमारे ऊपर एक सफेद रंग का शॉल डाला गया हो।'' जबकि अन्य लोगों का कहना था कि उन्होंने उन पर एक शानदार बौछार महसूस की। फिर भी, कुछ कहते हैं, कि आग हमारे ऊपर उतर आई।'' इसलिए अलग–अलग गवाही हैं जो हमने पवित्र आत्मा के रूपों के बारे में सुना है। लेकिन न तो पवित्र आत्मा जल है, न ही शाल, और न ही ऐसी कोई चीज जिसे 'पैसों से खरीदा जा सके'। कोई भी हमारे प्रभु परमेश्वर के रूप को स्थापित नहीं कर सकता है, क्योंकि वह अलग–अलग समय पर विभिन्न रूपों को प्राप्त करते है। वह लोगों को अलग तरह से छूते है और कभी भी एक ही रूप जैसा स्पर्श नहीं होता। उनकी आवाज़ तेज़ है, जैसे बहती नदी की आवाज़ हो। यूहन्ना 14: 17 ''अर्थात सत्य का

आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता हैः तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।'' किसी ने भी प्रभु परमेश्वर को देखा या सुना नहीं है। इस प्रकार हर कोई उन्हें अलग तरह से जानता है और उसे विभिन्न रूपों में पहचानता है। लेकिन, हम जो सत्य को देखते हैं या सत्य को जानते नहीं हैं, कहते हैं कि जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो हम पवित्र आत्मा को विभिन्न रूपों में देखते हैं, यह केवल हमारी कल्पना है और सत्य नहीं है। लेकिन हमारा प्रभु परमेश्वर एक बादल है, एक ऐसा बादल जो चुने हुए इस्राएलियों के लिए दिन में छाया के खंभे की तरह थे और रात के समय आग के खंभे की तरह थे। मिस्र से लाखों इस्राएलियों को बंधन से बाहर निकालने के दौरान, परमेश्वर उनके साथ लगातार एक बादल के रूप में थे। हमारा परमेश्वर भी ओस के एक रूप है, जो इस्राएलियों के लिए मन्ना में बदल गया था। हर सुबह ओस गिरती थी और इस्राएलियों ने इसे मन्ना के रूप में एकत्र किया, इसे अपने दिन के भोजन के रूप में खाया। हमारा प्रभु एक निष्पक्ष प्रभु है और वह एक सच्चा प्रभु है। क्योंकि इस दुनिया के लोग इस सत्य को नहीं पहचानते हैं, इसलिए वे प्रभु के प्यार को नहीं जानते हैं, इस प्रकार वे कहते हैं कि प्रभु उन्हें विभिन्न रूपों में दिखाई दिए।

नूह के समय के दौरान, प्रभु ने बाढ़ से दुनिया को नष्ट कर दिया। 40 दिन और रात के अंत में, नूह ने दो पक्षियों को विदा किया जैसे की... कौआ और कबूतर। कौवे ने कई बार जहाज के यहाँ–वहाँ उड़ान भरी और अंत में वह उड़ गया। जबकि कबूतर, कुछ दिनों के बाद वापस जहाज पर लौट आया। यहाँ हम देखते हैं कि कौआ एक अशुद्ध पक्षी के रूप में जाना जाता है, उसकी यह आदत है की वह मरे हुए चूहों और अन्य मृत चीजों को खाता है। इसलिए यह कभी नहीं लौटा। हममें से कुछ के पास कौवे की प्रकृति है और जीवन में कभी–कभी यह सतह पर होता है। हालाँकि हम बहुत दिखावा करते हैं या कार्य करते हैं कि हम बदल गए हैं लेकिन यह प्रकृति अभी भी हम में है और कभी–कभी हमारे जीवन पर भी शासन करती है। इस प्रकार, प्रभु के सामने हम ढोंग नहीं कर सकते। वह हमारा पवित्र और सच्चा परमेश्वर है, हमें अपने आप को पवित्र करना चाहिए, खुद को पवित्र करें और अपने क्रियों को और कार्यों को अपने प्रति सत्य रखना चाहिए। आइए वचन को पढ़ें गलातियों 6: 8 ''क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।'' यहाँ हम जो दो गुणों को पढ़ते हैं वह है .. शारीरिक और आत्मिक गुण। शारीरिक गुणवत्ता हमें मृत्यु तक ले जाती है, जबकि आत्मिक गुणवत्ता हमें अनंत जीवन का आशीर्वाद देती है। शास्त्र में हम सभी ने अतिव्ययी पुत्र की कहानी अच्छी तरह से पढ़ी है। लूका 15: 12–21 ''12 उन में से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी। 13 और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी। 14 जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। 15 और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा : उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा। 16 और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था। 17 जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। 18 मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। 19 अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले। 20 तब वह उठकर, अपने

पिता के पास चलाः वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। 21 पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं।'' यह दुनिया और इसके लोग हमें पापपूर्ण तरीके सिखाता हैं, यह हमें सच्चाई नहीं सिखाता है। जैसे दुनिया ने छोटे बेटे को अपने पिता से लड़ना और अपने हिस्से की माँग करना सिखाया। इस दुनिया ने उसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया। फिर, जब अंत में खाने के लिए कोई खाना नहीं था और उसे सूअर का खाना खाना पड़ा, तो बेटे को अपने पिता का घर याद आ गया और वह अपने पिता के घर लौट आया। इस दुनिया के लोग हमेशा हमें खुद को बर्बाद करना सिखाते हैं। अय्यूब 20ः 21–22 ''21 कोई वस्तु उसका कौर बिना हुए न बचती थी; इसलिये उसका कुशल बना न रहेगा 22 पूरी सम्पत्ति रहते भी वह सकेती में पड़ेगा; तब सब दुःखियों के हाथ उस पर उठेंगे।'' वचन ''29 परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य का अंश, और उसके लिये ईश्वर का ठहराया हुआ भाग यही है।'' हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारा कोने का पत्थर प्रभु है। वह कभी–कभी ओस और कभी–कभी दूसरों के लिए बादल होते है। उनके बिना हम किसी के लिए योग्य नहीं हैं, हमारा कोई जीवन नहीं है। यीशु ने कहा यूहन्ना 15ः 5 ''मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।'' हमें जीवन में फलित होने के लिए प्रभु के साथ जुड़ना चाहिए।

जैसा कि हम पहले पढ़ चुके हैं कि नूह ने दो पक्षियों को एक कौवे और दूसरे कबूतर को भेजा। कौआ, उड़ान भरकर यहाँ–वहाँ घूमता रहा। लेकिन कबूतर उड़ गया, और जब उसे आराम करने के लिए कोई जगह नहीं मिली, तो वह वापस जहाज पर लौट आया। एक हफ्ते के बाद एक बार फिर नूह ने कौवे और कबूतर दोनों को जहाज के बहार भेजा। कौवे ने फिर से वापस नहीं आने के लिए उड़ान भरी, लेकिन कबूतर जैतून की एक शाखा के साथ वापस जहाज पर लौट आया। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 8ः 6–9 ''6 फिर ऐसा हुआ कि चालीस दिन के पश्चात नूह ने अपने बनाए हुए जहाज की खिड़की को खोल कर, एक कौआ उड़ा दियाः 7 वह जब तक जल पृथ्वी पर से सूख न गया, तब तक कौआ इधर उधर फिरता रहा। 8 फिर उसने अपने पास से एक कबूतरी को उड़ा दिया, कि देखें कि जल भूमि से घट गया कि नहीं। 9 उस कबूतरी को अपने पैर के तले टेकने के लिये कोई आधार ने मिला, सो वह उसके पास जहाज में लौट आईः क्योंकि सारी पृथ्वी के ऊपर जल ही जल छाया था तब उसने हाथ बढ़ा कर उसे अपने पास जहाज में ले लिया।'' वचन 10 –12 ''10 तब और सात दिन तक ठहर कर, उसने उसी कबूतरी को जहाज में से फिर उड़ा दिया। 11 और कबूतरी सांझ के समय उसके पास आ गई, तो क्या देखा कि उसकी चोंच में जलपाई का एक नया पत्ता है; इस से नूह ने जान लिया, कि जल पृथ्वी पर घट गया है। 12 फिर उसने सात दिन और ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया; और वह उसके पास फिर कभी लौट कर न आई।'' जैतून का पेड़ 'शांति' का प्रतीक है, इसलिए कबूतर, 'शुभ समाचार' 'के साथ नूह के पास आया था, अच्छी खबर यह थी कि दुनिया में पानी पूरी तरह से कम हो गया था और सूख गया था। जब यीशु मसीह इस दुनिया में पैदा हुए थे, तो यह लिखा गया था की लूका 2ः 10 ''तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा।'' प्रभु के दूत ने इस दुनिया में 'शुभ समाचार' लाया है। उसी तरह, कबूतर ने भी नूह के लिए खुशखबरी लाते हुए यह जताया कि जहाज़ से बाहर निकलने का समय आ गया है और दुनिया में पानी कम हो गया है। जब यीशु मसीह को यरदन नदी में बपतिस्मा दिया गया और

जैसे ही वह पानी से बाहर निकले, स्वर्ग खुल गया और पवित्र आत्मा के रूप में एक कबूतर उनके पास आया। आज भी हमें उस पवित्र आत्मा को नहीं खोना चाहिए जो हमें इस धरती पर स्वतंत्र रूप से दी गई है, हमें अपने आप को पवित्र और धर्मी रखना चाहिए, जैसा कि हमने पढ़ा है यूहन्ना 15: 5 ''मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।'' हमें पवित्र आत्मा के साथ जुड़ना चाहिए जो पृथ्वी पर है। जैसा कि वचन कहता है कि उसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते। आइए हम पढ़ें प्रेरितों के काम 10 : 44 ''पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया।'' जैसा कि पतरस अभी भी वचन बोल रहा था, पवित्र आत्मा सभी पर उतरकर आया। इस प्रकार, हमें यह समझना होगा कि जब हम शास्त्रों में पढ़ते हैं कि 7 दिनों के बाद नूह द्वारा कबूतर फिर से छोड़ा गया था, तो उसने कभी भी जहाज़ पर वापस आने के लिए उड़ान नहीं भरी। इसका मतलब यह है कि कबूतर एक पवित्र आत्मा था जो हमेशा के लिए इस पृथ्वी पर रहा। जैसा कि परमेश्वर ओस और बादल के रूप में हमारे साथ है, वह एक कबूतर के रूप में पृथ्वी पर उतारकर आए और इस तरह इस पृथ्वी पर हमेशा के लिए रह गए। जब पतरस ने अन्यजातियों के सामने उपदेश दिया, जिन्होंने पहले परमेश्वर का वचन कभी नहीं सुना था, पवित्र आत्मा ने उन सभी पर भर गया और उनका अभिषेक किया। यहोशू 3: 5 '' फिर यहोशू ने प्रजा के लोगों से कहा, तुम अपने आप को पवित्र करो; क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा।'' यहोशू ने इस्त्राएलियों से कहा ''आज अपने आप को पवित्र करो, क्योंकि परमेश्वर कल तुम्हारे बीच चमत्कार करेगा''। हमारा जीवन एक कबूतर की तरह होना चाहिए न कि कौवे की तरह। हमें हमेशा अपने जीवन को शुद्ध करना चाहिए और इसे पवित्र रखना चाहिए। यदि हम अपने जीवन को पवित्र बनाए रखते हैं, तो कल हम अपने जीवन में प्रभु के अद्भुत चमत्कार को देख सकते हैं। इसलिए, अगर हम कल चमत्कार देखना चाहते हैं, तो हमें आज अपने जीवन को पवित्र करना चाहिए।

जब पवित्र आत्मा हम पर उतरता है, तो कोई भी पवित्र आत्मा को आज्ञा नहीं दे सकता है, यह हमें दूसरों के लिए एक मनोव्यथित हृदय के साथ प्रार्थना करने की शक्ति देगा। पवित्र आत्मा हमें जरूरत के समय दूसरों को प्रोत्साहित करने के लिए दया और प्यार देता है। आइए हम पढ़ते हैं यशायाह 38: 14 ''मैं सूपाबेने वा सारस की नाईं च्यूं च्यूं करता, मैं पिण्डुक की नाईं विलाप करता हूं। मेरी आंखें ऊपर देखते देखते पत्थरा गई हैं। हे यहोवा, मुझ पर अन्धेर हो रहा है; तू मेरा सहारा हो!'' यह करुणा की ऐसी अद्भुत प्रार्थना है, जिसे यशायाह ने बनाया है। जब परमेश्वर हमें आत्मा का अभिषेक देते है, तो हम अन्य लोगों के लिए दया के साथ प्रार्थना कर सकते हैं। यशायाह 59: 11 ''हम सब के सब रीछों की नाईं चिल्लाते हैं और पण्डुकों के समान च्यूं च्यूं करते हैं; हम न्याय की बाट तो जोहते हैं, पर वह कहीं नहीं; और उद्धार की बाट जोहते हैं पर वह हम से दूर ही रहता है।'' ऐसा अभिषेक नबी यिर्मयाह पर भी था। आइए हम पढ़ें यिर्मयाह 9: 1 ''भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आंखें आँसुओं का सोता होतीं, कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों के लिये रोता रहता।'' यिर्मयाह भी पवित्र आत्मा द्वारा दया और प्रेम के साथ प्रभु से प्रार्थना करने के लिए दया से भर गया था। जब तक नबी, यशायाह और यिर्मयाह दोनों का अभिषेक नहीं किया जाता, तब तक उन्हें प्रार्थना करने की इतनी दया नहीं होती। आइए हम पढ़ते हैं यिर्मयाह 13:17 ''और यदि तुम इसे न सुनो, तो मैं अकेले में तुम्हारे गर्व के कारण रोऊंगा, और मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बहती रहेगी, क्योंकि यहोवा की भेड़ें बंधुआ कर ली गई हैं।'' अश्रुपूर्ण प्रार्थना करने के लिए, हमारे पास पवित्र आत्मा होना चाहिए। याद रखें, यदि परमेश्वर हमें

पवित्र आत्मा नहीं देते, तो हम दूसरों के साथ दया की प्रार्थना नहीं कर सकते। आइए हम पढ़ते हैं श्रेष्ठगीत 4: 1 ''हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तू सुन्दर है! तेरी आंखें तेरी लटों के बीच में कबूतरों की सी दिखाई देती है। तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के समान हैं जो गिलाद पहाड़ के ढाल पर लेटी हुई हों।'' जैसा कि हम जानते हैं कि कबूतर पवित्र आत्मा का एक रूप है, जब यीशु का जन्म हुआ था, उनके माता–पिता ने पवित्र मंदिर में बलि देने के लिए युवा कबूतरों का एक जोड़ा लेकर आए थे, उनके जन्म के आठवें दिन बाद, हम पढ़ते हैं लूका 2: 24 ''और प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार पंडुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे ला कर बलिदान करें।'' हमारे लिए वचन सुनना और उसका पालन करना महत्वपूर्ण है। हम में से बहुत से लोग केवल वचन को सुनते हैं लेकिन उनका पालन नहीं करते हैं। हम में से कई एक कान से सुनते हैं और दूसरे से निकाल देते हैं। हमारा जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए। हमें अपने जीवन में प्रभु के महान कार्यों को नहीं भूलना चाहिए। अतिव्ययी पुत्र की तरह, अपने पिता के साथ लड़कर अपनी संपत्ति का हिस्सा लेकर चला जाता है, अंत में जीवन में सब कुछ खो देने के बाद उसे सूअर के साथ भोजन करना पड़ा। हममें से बहुत से लोग खुद को अन्यजातियों के साथ अशुद्ध करके अपने हाथों से अपने लिए अभिशाप लाते हैं। हम वचन के ज्ञान के साथ बढ़े हुए गए हैं फिर भी हम अन्यजातियों के साथ घुलमिल कर खुद को अशुद्ध करते हैं। हमें हमेशा प्रभु के भय और प्रेम में रहना चाहिए। हमारा पहला बलिदान हमेशा प्रभु के लिए होना चाहिए और फिर हम इस दुनिया के साथ साझा कर सकते हैं। एक बार फिर से हम पढ़ते है गलातियों 6: 8 ''क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।'' यहां तक कि अदन वाटिका में, प्रभु ने आदम और हव्वा को स्पष्ट चुनाव दिए: ''यदि तुम निषिद्ध वृक्ष के फल खाते हों, तो तुम मर जाओगे''। उन्होंने प्रभु की अवज्ञा करने के लिए चुना और निषिद्ध फल खाया और इस तरह आत्मारिक रूप से उनकी मृत्यु हो गई। यद्यपि वे उसके बाद 930 तक जीवित रहे, वे शारीरिक रूप में जीवित थे लेकिन आत्मारिक रूप से मृत हो गई थी। याद करें यहोशू ने इस्त्राएलियों से क्या कहा कि ''आज अपने आप को पवित्र करो, कल के लिए तुम प्रभु के चमत्कारों को देखोगे''।

निर्गमन 33: 21–22 ''21 फिर यहोवा ने कहा, सुन, मेरे पास एक स्थान है, तू उस चट्टान पर खड़ा हो; 22 और जब तक मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे तब तक मैं तुझे चट्टान के दरार में रखूंगा, और जब तक मैं तेरे साम्हने हो कर न निकल जाऊं तब तक अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा;'' हमारा प्रभु वही अपरिवर्तनशील प्रभु है। अगर हम खुद को उसके लिए पवित्र रखेंगे, तो वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा। वह हमें हमेशा अपनी छाया में रखेंगे। आइए हम पढ़ते हैं 1 कुरिन्थियों 10: 4 ''और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उन के साथ–साथ चलती थी; और वह चट्टान मसीह था।'' प्रभु उनकी चट्टान थी। हमने अपने बाइबल में पढ़ा है यशायाह 44 में, हमारे जीवित प्रभु के समान कोई दूसरा प्रभु नहीं है। यीशु मसीह एकमात्र ऐसे प्रभु है जो अनन्त जीवित जल से हमारी प्यास बुझा सकते है। हमें हमेशा एक पवित्र छाया में रहने के लिए तरसना चाहिए, निर्गमन 34: 2 ''और बिहान को तैयार रहना, और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मेरे साम्हने खड़ा होना।'' सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने, उनके सिंहासन के आगे खड़े होने के लिए, हमें अब अपने जीवन को तैयार करना चाहिए। जैसा कि हमने पहले भी पढ़ा, जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो वे आत्मारिक रूप से मर गए, लेकिन 930 वर्षों तक वे शारीरिक रूप से जीवित रहे।

हम में से कई आज भी आत्मारिक रूप से मृत हैं लेकिन हम केवल शारीरिक रूप से जीवित हैं। आइए हम अपने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सिंहासन के समक्ष खड़े होने के लिए खुद को तैयार करें। यशायाह 60: 8 ''ये कौन हैं जो बादल की नाईं और दर्बाओं की ओर उड़ते हुए कबूतरों की नाईं चले आते हैं?'' ये कौन हैं जो बादल की तरह उड़ते हैं, कबूतर की तरह है? वे पवित्र हैं! शुद्ध वाले! अभिषेक वाले! वे प्रभु के प्यार का अनुभव करने वाले हैं! वे वही हैं जिन्होंने क्रूस को ढोया है, मसीह के लिए बोझ और दर्द उठाया है। वे आज्ञाकारी हैं। इसके लिए हमें आज ही अपना जीवन तैयार करना चाहिए। क्रिस्ती धर्म शुद्धता और सच्चाई का मार्ग है। भजन संहिता 55 : 6 ''और मैं ने कहा, भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते तो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता!'' दाऊद कहता हैं, "अगर मेरे पास पंख होते, तो मैं आराम की जगह खोजने के लिए कबूतर की तरह उड़ता''। मत्ती 11: 28 ''हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'' हमें एक कबूतर की तरह बनना चाहिए। प्रभु हमें अपने सिंहासन के अनुग्रह यानी स्वर्ग से बुला रहे हैं, इस प्रकार, वहाँ तक पहुँचने के लिए हमें एक कबूतर की तरह उड़ना चाहिए, एक कबूतर की तरह बनने के लिए हमें आज अपने जीवन को शुद्ध और पवित्र करना चाहिए। हमें पढ़े जाने वाले 'वचन' को समझने के लिए आत्मारिक आँखों की आवश्यकता होती है। हमें खुद को पवित्र करने की आवश्यकता है, हमें अभिषिक्त होने की आवश्यकता है, इस प्रकार, हमें अपने आप को शुद्ध करने और पवित्र आत्मा के साथ खुद का अभिषेक करने की आवश्यकता है और स्वर्गीय राज्य तक पहुंचने के लिए कबूतर की तरह बनना चाहिए। जैसे हम यशायाह में पढ़ते हैं ''ये कौन हैं जो बादल की तरह उड़ते हैं, कबूतर की तरह हैं ? हम भजन संहिता में भी पढ़ते हैं, दाऊद कहता हैं, ''अगर मेरे पास पंख होते, तो मैं कबूतर की तरह उड़ता और आराम करने की जगह पाता''। यीशु खुद उन लोगों को बुलाते हैं जो बोझिल हैं और भारी भोज से दबे हुए हैं ''मेरे पास आओ, मैं तुम्हें आराम दूंगा''। इस प्रकार, स्वर्गीय राज्य तक पहुंचने के लिए हमें न केवल पंखों की आवश्यकता है, बल्कि हमें कबूतर की तरह भी बनना चाहिए। भजन संहिता 116 : 7 ''हे मेरे प्राण तू अपने विश्राम स्थान में लौट आ; क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है।'' केवल प्रभु की दया के कारण हम आराम की जगह पर पहुँचेंगे। उसके बिना हम वहां कभी नहीं पहुंच सकते। हमें उनके प्यार, अनुग्रह और दया की आवश्यकता है। प्रभु को अपने पवित्र लहू से हमें शुद्ध करना चाहिए और हमें छुड़ाना चाहिए। तभी हम उनके विश्राम स्थल तक पहुँच सकते हैं। इस प्रकार, अगर हम शारीरिक रूप में रहना जारी रखते हैं, तो हमें आराम करने की जगह तक पहुंचने की उम्मीद नहीं कर सकते। यह केवल आत्मारिक रूप से है कि हम आराम करने की जगह पर पहुँच सकते हैं। उनके बिना हमारा जीवन निरर्थक है। आज, प्रभु परमेश्वर ने विभिन्न रूपों में उनके वचन के माध्यम से हमसे बात की है, इस प्रकार हमें अपने जीवन को पवित्र करने की आवश्यकता है, ताकि हम कल उनके अद्बुध कार्यों और चमत्कारों को देख सकें। जैसा कि हम पढ़ चुके हैं गलातियों 6: 8 ''क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।''

यदि हम इस वचन के अनुसार जीते हैं तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। यह वचन हमारे जीवन में आशीर्वाद लाए। प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।